S.K. SINGH

मेरा नाम सुरेन्द्र कुमार सिह है हमकों यहॉ पर लोग S.K. Singh बोलते है मै बिहार का केमुरभवॉ जिला पडता है और काम के लिए सर्वप्रथम बिलासपुर में मै ए पीपी रलाईज में १९८१-८२ में आया था और वहॉ पर एमपी एलाइज में मैने काम शुरूआत किया उसके बाद वह फैक्ट्री बिक गयी और वह ज्वाईट सैकेटरी कम्पनी थी उसके बाद वह कम्पनी धीरे धीरे खात्म हो गयी ।

उसके बाद हम लोग १९८७ में यहॉ से सिम्पलैक्स इन्जीनियरिंग एण्ड फाउन्डरी उरला में हम लोग काम पर लगें तो यह सिम्पलैक्स कास्टिंब जो है यह स्पेशल कास्टिंग है तो यहॉ पर हम लोग जब काम पर लगे ।

Q- क्या काम करते थे आप वहॉ पर

Ans- मै वहॉ पर टिम्बर मैन का काम करते थे ।

Q- उसमें क्या करना पडता था आपकों

Ans- गला हुआ लोहें का जो सॉचा बनता था उसमें हम लोग उसकों ढालते थे ।

Q- जहॉ जगह थी काम करने की वहॉ की कंडीशन थोडा बताए ।

Ans- वहॉ नया नया फैक्ट्री वहॉ स्टील डिविजन में खोला था तो हैल्थ एण्ड सुफटी की बहुत समस्या थी वहॉ और जो श्रम कानून का मामला था वह अपनी तरीके से चलाता था क्योकि वह वहॉ का

माना हुआ कम्पनी था ओर वहॉ पर कई बार मजदूरों को पिटाई बन्द करके मारना जब मर्जी काम से निकाल देना उसकें वहॉ चलता था । और वही ढॉचा यहॉ उरला में भी चालू किया ।

Q- आप वहॉ पर ठेका मजदूरी पर थें या परमानेन्ट थे ।

Ans- हमकों तो ज्वाईगि देकर बुलाया था और २ साल के बाद हमकों खुद को बोल की ठेका ले लों आप आपनी साईड का ठेका ले लें । हमने बोला हम ठेका नही लेगें तो दूसरे को हमारा ही एक साथी था उसकों ठेका दे दिया और हम लोगों को बोला उसी ठेका में काम करने के लिए

Q- तनख्वा क्या देता था

Ans- शुरूआत में हमारा वेतन ६५० रूपयें लगाया था उसके बाद उस समय बहुत कम पेमेन्ट था तो उकसे बाद हर साल ५० रूपयें करके बढाता था और ओवर टाईम भी सिंगल था और हेल्थ एंड सेफटी का तो कुछ नही था न मकान एलाउंस वगैरा कुछ नही था सिर्फ जो मिलता था वह ६५० रूपयें वेतन ही मिलता था ।

Q- रोज की हाजरी मिल जाता था कि नही

Ans- हाजरी नही महीने का वेतन था काम हर दिन देता था महीने का बेतन था ६५० रूपयें

Q- वहॉ पर कोई यूनियन थी उस समय जब आप वहॉ काम करते थे ।

Ans- मनही नही उस समय कोई यूनियन नही था

Q- कोई लाल झन्डा नही था

Ans- कोई यूनियन वगैरा नही था जब मालिक का किसी को भी जब चाहे काम से निकाल देगा बन्द कर देना और जबरदस्ती दादागिरी करना अगर आप थोडा टाईट होकर बोलेगें तो गर्दन पकड करके गेट से बाहर कर देना सिक्योरिटी गार्ड को बुलाकर के धक्का मार करके बाहर निकाल देना ।

Q- आप मालिक से कभी मिले थे या मैनेजर ही यह सब करता था

Ans- मैनेजर ही करता था और मालिक से भी हम लोग मिले थें

Q- मालिक कौन था

Ans- नवीनशाह था उसका कोई दीपक शाह वह हमेशा यहॉ रहता था जो अभी तो मर चुका है नवीन शाह हफता दस दिन में आता था और उसी का चलता था

Q- और वह वही नवीनशाह है जो फिर नियोगी जी हत्या काण्ड में मुलिजम था ।

Ans- हॉ नियेागी जी की हत्या काण्ड में मुल्जिम भी है और वैसे मुलचन्दशाह भी आता था चन्द्रकांतशाह भी सब लोग आते थे लेकिन देखरेख ज्यादा नवीनशाह ही करता था ।

Q- फिर आप मुक्ति मोर्चा में कैसे पहुच गये ।

Ans- हम लोगें का वहॉ पर न्यूनतम वेतन की बात को लेकर बात चला फिर हाउस रेन्ट साईकिल एलाउन्स और पीएफ काटने के लिए बात चला

Q- यह बात किसने उठाई

Ans- हम मजदूर लोगों ने तो मालिक लोगें ने उसके तरफ कोई ध्यान नही दिया

Q- यह कौन सा सन था जब आप लोगों ने हाउस रेन्ट और न्यूनतम वगैरा के लिए बात उठाई

Ans- १९९० की बात है बोनस की भी बात चली तो कोला कि पॉच साल से पहले हम बोनस नही देगें क्योंकि हमारी कम्पनी को पॉच साल नही हुआ है । श्रम कानून का तो वहॉ कोई ठिकाना नही नही था जब जो मर्जी आये करता था तो मजदूरों ने आपस में चर्चा किया कि हम लोगों को यूनियन बनाना चाहिए और धीरे धीरे बात की शुरूआत हुई तो उस समय नियोगी जी भिलाई के अन्दर उसी कम्पनी में दूसरी फैक्टरी में वहॉ पर

साथी लोग नियोजी के साथ जुडकर आन्दोलन की शुरूआत कर रहे थे ।

Q- आपको इसकी खबर कैसे मिली ।

Ans- वहाँ भिलाई लोग आते जाते थें तो कुछ मजदूर भिलाई से ही सिम्पलैक्स में आते थें जो भिलाई में ही रहते थें और यहाँ काम करते थें वह पुराने श्रमिक थें उस कम्पनी के तो यहाँ जब चालू हुआ तो कुछ मजदूरों को यहाँ भेजा था तो वहाँ मजदूर लोग सुबरें उसी के ट्रक में आते जाते थें तो यहाँ पर चर्चा शुरू हुआ तो हम लोग बोले कि हम लोग क्यों पीछें रहे हमारे यहाँ भी तो शोषण हो रहा है । मजदूरों को कभी भी निकाल दे रहा है । कोई ठिकाना नही है । तो हमकों भी जुडकर के उन मजदूरों का साथ देना चाहिए ताकि हम उनका साथ देगें तो एक साथ मिलकर लडेगें तो मालिकों के साथ लडनें में सुविधा होगा ' तो यहाँ पर भी हम लोगों ने यूनियन बनाई और जब हम लोग यूनियन बनाने लगें तो मालिक लोगों का दबाव इतना बढा कि कभी भी कम्पनी के अन्दर मजदूरों को रोक करके गाली

गलौच करना मैनेजर लोग दादागिरी करना एक बार तो पूरें कम्पनी के मजदूरों से साइन करवायें । हम लोगों से कि हम यूनियन में नही रहेगें । हम कोई भी यूनियन नही बनायेगें । इस तरह का पूरे मजदूरों से फाउन्डरी से लेकर स्पेशल कास्टिंग तक

Q- टोटल कितने मजदूर थें सिम्पलैक्स फाउन्डरी कास्टिंग में

Ans- मजदूर तो हम लोग करीब ३५० के आस पास थें

Q- और उसमें ज्यादा लोग ठेकेदार थें

Ans- हॉ ज्यादा लोग ठेके पर थे

Q- परमानेन्ट कितने होगें अन्दाजन

Ans- अन्दाजन परमानेन्ट ५०-६० लोग होगे बाकि सब ठेके में थे

Q- आप बता रहे थें कि सबसे दस्तखत करवा लिये ।

Ans- हॉ सबसे दस्तखत करवाया फिर दस्तखत कराने के बाद फिर यह चर्चा तो बोलते कि ठीक है दस्तखत करने से कोई इस टाईप का होता नही है फिर सामूहिक मतलब कि कम्पनी को हम आपसी यूनियन की ताकत बताने के लिए कि हम मजदूर संगठित

है तो एक दिन का साकेंतिक हडताल हुआ पूरे सिम्पलैक्स कास्टिंग में और भिलाई बी.सी में सब मिलकर १५ नवम्बर १९९० को एक दिवसीय साकेंतिक हडताल की गयी ।

Q- तो तब आप लोग लाल हरा के साथ जुड चुके थें ।

Ans- पूरे लोग जुड चुके थे और पूरी कम्पनी बन्द रही । सब मजदूर उस समय बाहर आ गये थे पूरे लोग आन्दोलन में थे फिर कम्पनी चालू हुआ और मजदूरें के साथ न्याय और बढता गया और हमारे यहाँ १८ सितम्बर को करीब १७ दिसम्बर की रात हम लोग जब डयूटी में गये तो अचानक कम्पनी जो हम लोगें का १२ बजे नाईट सिफट थी तो रात को कम्पनी को बन्द कर दिया गया और वह रात को १२ बजे बोलता है कि तुम लोगों के लिए आज से हाफ लगेंगा । आप लोग जाओं हम लोग बोले यह आपकों लिखाकर देना था तो पहले बता देना चाहिए था १२ बजे रात को हम लोग कहाँ जायेगें इतनी दूर दूर से लोग आये है ।

तो बोला कि आज ड्यूटी आपकों नही मिलेगा या तो १६ दिसम्बर के वजह से होगा पता नही लेकिन उनका दबाव बदमाशी किस्म की शुरूआत हो गयी वह लोग बोले कि हमारे पास आर्डर नही है । हम नाईट सिफट को आज नही चला पायेगें । सूचना कर देना था हम लोग उतनी दूर से आये है उसी १० बजे वापस चले जाते । फिर १८ दिसम्बर को हम लोग गेट पर धरना अन्दर नही दिये तीनों सिफट दिये और फिर उन्होंने कम्पनी को चालू नही किया । १६ दिसम्बर वीर नारायण सिहं दिवस मनाने के लिए भिलाई गये और २० तारीख को जब हम लोग पहली सिफट में गये ड्यूटी करने के लिए तो कम्पनी के गेट पर एक कागज टाईपिंग करके गार्ड लेकर खडा था और मैनेजमैन्ट के लोग थें और टाइम आफिस के लोग थें इसमें साईन करों उसके बाद जाओं तो उसमें लिखा था कि फिर वही हमने यूनियन से कोई सम्बंध नही है और हम अपनी गलती को माफी मांगते है ।

आज के बाद ऐसी कोइ गलती नही होगी और इसके बाद आप साईन कीजिए और फिर अन्दर जाइए तो हम लोगों ने बोला कि हम कोई भी लोग इस पर साईन नही करेगें और सब लोगों ने उसी दिन से सिम्पलैक्स गेट के बाहर में हम लोग १० महीने बैठैं २० दिसम्बर से ।

Q- कितने लोग थें आप

Ans- हम ३११ लोग थे

Q- सब लोग हड़ताल पर थें

Ans- हॉ सब लोग

Q- सब लोग यूनियन के मैम्बर बन गये ।

Ans- जी हॉ

Q- क्या पूरी फक्टरी बन्द थी ।

Ans- जी हॉ तो एक एटेक यूनियन का नेता था संबल चकवर्ती तो उसने अपने आदमी और कुछ बाहर से आदमी आकर स्ट्राईक टूटा नही । इसलिए की कम्पनी का काम चाले रहे । हमारे में से कोई भी मजदूर काम करने के लिए नही गया और उन्होने

वहाँ गेट में बहुत बार मार झगडा कराने की कोशिश की । लाल झन्डा लेकर जो मजदूर एक गेट से लेकर दूसरे गेट ऐसे घूमते थें अन्दर में रखते थें ताकि उत्तेजित होकर मारपीट करे हमारें लोगों के साथ में गेट में कई बार उनके गुन्डें बदमाशों द्वारा मारपीट किया गया । हम लोगों को एक बार तो २४ मई के आस पास हम दो तीन लोग सुबह सुबह थें गेट के बाहर में, सुखलाल हलधर और एक दो और थें तो उनके गुन्डो द्वारा हम लोगों के साथ मारपीट किया गया और मारपीट करने के बाद में ३०२ का मामला पुलिस ने हम लोगों के उपर बनाया और ३२४ का मामला बनाया उस समय प्रशासन का जो रवैया था इतना गलत रवैया था कि जो हडताल में मजदूर थें उनके उपर गलत सलत कभी चोरी का केस कभी मारपीट का केस मतलब इतना प्रताडित करने के लिए कम से कम १०-१० केस हम लोगों के उपर लगा है ३०२, ३०७ का मामला तो हम लोगों के उपर के लगा था जिसमें अभी एक केस में बरी हुए है । एक अभी और है और ऐसे ३२३, ऐसे कई मामले चल रहे है, श्रम कानून का

नाम वहाँ पर कुछ नही था और लेबर डिपार्टमैन्ट कुछ करना भी चाहता था तो यहाँ का जिला प्रशासन और राजनीतिक नेता लोगों का ऐसा दबाव था कि वह मजबूर थें और उनके कुछ अधिकारी लोगों के भी उनके अन्दर कुछ सांठ-गाँठ की ही लेकिन उसके बाद भी कुछ अधिकारी लोग काम करने की पहल भी कियें बहुत सी ऐसी बैठके भी चली लेकिन मालिक पक्ष की ओर से कोई भी लेबर डिपार्टमैन्ट के बैठक में उपस्थित नही हुए है । और नतीजा यहाँ तक निकला कि हम लोगों ने भिलाई में रेल रोकी ।

Q- वह जो ALC वगैरा के साथ जो मिटिगं चली गोली काण्ड के पहले उसमें आप भी शामिल हुए थे ।

Ans- जी हाँ एक लेबर कमीशन उस वक्त थें सुरेन्द्र नाथ शुरू-शुरू में वह रायपुर में आये थें हम लोग बैठक में गये नियोगी जी भी थें उस समय लेकिन मालिक पक्ष में कोई नही गया ।

Q- तो उनके खिलाफ कोई एक्शन नही लिया गया

Ans- नही कोई एक्शन नही लिया गया, कोई कार्यवाही नही क्योकि जिस तरह से यहाँ पर उस समय BJP की सरकार थी पटवा की सरकार थी । और यहाँ पर जो जिला प्रशासन थें एक पंगू टाईप के थें कोई उसमें उनका इनटेस्ट कोई लगाव नही । मतलब सिम्पलैक्स कम्पनी के पास में हर समय छावनी पुलिस रहता था एक डगगा दो डगगा पुलिस मतलब थाने के वजह वह लोग सिम्पलैक्स कम्पनी की डयूटी करते थें इस औधोगिक क्षेत्र में मजदूर रैली न निकाल सके । मजदूर कुछ न कर सके यहाँ बहुत दिनों तक करीबन ६ महिनों तक १४४ लगाकर रखें थें पुरा औधोगिक क्षेत्र में १४४ धारा लगाकर रखें थें लेकिन उसके बाद भी मजदूर अपनी हिम्मत नही हारा, लडतें रहा और LC की बैठक इन्दौर हाईकोर्ट, जबलपुर हाईकोर्ट तमाम जगह

नियोगी जी की हत्या भी इन्ही उधोगपतियों ने करा दिया और उसके बाद हमने हमारे साथियों ने पूरें रेल पटरी का जाम कर दिया रेल रोकों लेकिन उसके बाद भी आज भी हम लोग अपनी जगह पर अडें हुए है । लड रहे है और बिलासपुर

हाईकोर्ट में भी लड रहे है और उसके साथ साथ आप देखिए पहले हम एक किरायें का आफिस के लिए थें सरोरा में जहाँ पर सिम्पलैक्स है ।

उसके बाद हम लोगों ने यहाँ बीर गांव में शहीद नगर बसायें यहाँ पर आफिस खोले है और यह करीब २००-३०० घरों की बस्ती है । इसकों भी बसाये है यह सरकारी जमीन है यह सरकारी भूमि को कब्जा करके यहाँ पर स्कूल और अस्पताल भी हम चलाते है और छोटें मोटें जो भी समस्याए होती है उसकों भी हल करते है । बाकी औधोगिक क्षेत्र में जहाँ भी मजदूरों की समस्या आती है वहाँ पर हम लोग उनके हक और अधिकार की लडाई लडते है । ऐसे ही एक बस्ती और है सिम्पलैक्स के पीछें में उसकों भी हम लोगों ने बसाया है वह भी करीबन २००-२५० घरों का है वह मजदूर नगर है ।

Q- यह जो आप बता रहे थे कि आप लोग वहाँ पर हडताल पर बैठें कही साल बैठें रहे आप लोग तो हडताल पर

Ans- हम लोग करीब १० महीनें बैठें थे

Q- तो आप लोगों पर हलधर जी पर काफी हमले हुए

Ans- बहुत हमला हुआ

Q- थोडा उसके बारे में बताइए और कौन करवाता था और कौन करता था

Ans- वह मालिक ही करवाता था अपने बदमाश गुन्डों से जिन्हें वह भिलाई से और बाहर से लाता था बिहारी लोगों को और मारपीट करवाता था सरदार लोगों को लाता था ।

Q- तो यह जो कहते है कि यहाँ पर जो उधोगपति है इनका अपना प्राईवेट एक फौज रहता है तो क्या यह बात सही है कि इनके पास गुन्डें बदमाश इनके साथ रहते है ।

Ans- हाँ पूरें उनके गुन्डें बदमाश आपकों मै बता रहा हूँ अभी भी उधोगपति गुन्डों और बदमाशों को पाल कर रखाते है । उरला औधोगिक क्षेत्र में हर कम्पनी में गुन्डें बदमाश रखाते है उनकों पैसा देते है खाने पीने के लिए देते है गाडी देते है उनका काम ही मजदूरों को डराना धमकाना है ।

सिम्पलैक्स में तो यह लोग खुलेआम तलवार लेकर चलते थे घटना सबेरे ६ बजे का है वह लोग पूरे तलवार और रोड लेकर आये और हम लोग बोले कि हम तो मैदान छोडेगें नही हम लोगों ने भी अपने बचाव के लिए वहाँ जो डंडा वगैरा रहता था उससे उनके साथ मुकाबला करते थें तो तलवार से हमला किया हमारे सिर पर तीन टॉका लगा हुआ है २-३ जगह लगा है सिर में हलधर जी के, दोनों बाहे तलवार से कट गया था सुखालाल का होठ कट गया मतलब यह पहली घटना नही है इससे पहले रात के करीब २ बजे हम लोग सो रहे थें पडांल में तो एक साथी था थानूराम वह लोग आये थे हम लोगों को खोजते खोजते लेकिन बाहर में वह सोया था तो उसी को वह लोग जगाकर के और उससे पूदे कि नही बातएगा तो बोला मै नही बताउंगा तब तक हम सब लोग जग गये हे तो वह उसकों एक लाठी मारकर के हाकी से वह लोग मारे थें तो उसका हाथ फैक्चर हो गया था वह लोग मारूति वैन में थे पीछें का उठाकर

के रखें थें तो जैसे ही हम बाहर आये तो सब गाडी में भाग गये तो वह इतना स्पीड में थें कि लगता था कि कही एक्सीडेन्ट कर जायेगें सब लोग तो यह एक घटना नही है कही घटनाएं है । कभी रात के २ बजे पहुच जाना किसी को शराब पिलाकर भेजना एक बार नियेागी मिटिंग ले रहे थें हम लोग सरोरा में उस समय मिटिंग में थें तो पडांल में दो लोग थें और दो लोग आये और चाकू हाथ में लेकर आये थें और पूछने लगे फलॉ फला कहॉ है साले तुम लोगों को मार देगें चाकू से यह कर देगें तो अपने साथी लोग तो आन्दोलन वाले । वह किसी बात से डरे नही है और वह उसकों डन्डें से मार करके उन लोगों को पकड लिए शराब पिये हुए तो थें फिर खबर किये हम लोग आये ।

फिर पुलिस वालों को बुलाये पुलिस वाले तो उन लोगों को पहचान गये उन सबके कोई इधर WRS Colony के बदमाश टाइप के थें तो बोले कि कैसे तुम यहॉ आ गये साले

तुम लोग तो वहाँ रहते हो यहाँ चाकू लेकर क्यों घूम रहे हो तो उनकों पुलिस वालें पकड कर ले गये ।

Q- तो जब आप लोगों के उपर यह महला वगैरा हुए तो क्या किसी पुलिस वालें ने इन लोगों के उपर एक्शन लिया कभी कोई केस इनके उपर बनाया जब आप लोगों को तलवार से मारा तो उसका इतना Proof मैडीकल है ।

Ans- उल्टा हमारे ही उपर ३०७ लगा दिया और जो लोग मारे थें उनाके हम लोग पहचाने उनका नाम बताये तो उनके उपर ३२४ लगाया इतना तलवार से मारकर

Q- और इसके पीछें किसका हाथ है इसके उपर कोई छानबीन कभी पुलिस ने की ।

Ans- कोई छानबीन पुलिस ने ही की हमने बोला भी कि यह सब उधोगपति लोग करवा रहे है । इसके उपर एक्शन लेना चाहिए वैसे भी जब हम आन्दोलन में है तो हमारे उपर हमला कौर करायेगा उस कम्पनी का प्रबन्धक ही करवायेगा मालिक ही करवायेगा तो यह हाल है उनाक और आज भी वह लोग गुन्डा

पाल कर रखते है और मारपीट भी करवाते है । आज भी जो मजदूर काम पर जाता है उनके साथ भी वही हाल है ।

Q- आप सब लोग जब नौकरी से निकाले गये तो उसके बाद उसका कभी मुकदमा वगैरा भी चला ।

Ans- जी हाँ

Q- उस मुकदमें में क्या हुआ

Ans- मुकदमा हमरा इन्दौर में भी चला उसके बाद यहाँ इन्डस्ट्रीयल कोर्ट में बहुत दिनों तक चल मतलब आज की न्याय व्यवस्था ही विभाव है आज की न्यायपालिका ही विभाव है उसने हमारे आन्दोलन के हतने दबावों के बदौलत उसे आदेश में लिखा कि काम से निकाला जाना गैर कानूनी है । साबित हो गया उसके बाद भी हम मजदूरों को उसने काम पर वापस लेने का आदेश नही किया उसने कानून को गलत दिशा देते हुए गलत रास्ता देते हुए हम लोगों को २०-२० हजार रूपयें मुआवजा के रूप में दिया है । उस केस को लेकर हम लोग हाईकोर्ट उस समय

जबलपुर था तो जबल पुर गये उसके बाद हाईकोर्ट विलासपुर बना है ।

तो बिलासपुर हाईकोर्ट में भी कोई सकात्मक वह नही है क्योकि कभी जज नही है कभी कुछ नही है मतलब जो ढुल मुल रवैया है मालिक लोगों का किसी तरीके से केस को खीचना बैसे ही यहाँ के जज लोगों की भी स्थिति है और जब हाई कोर्ट बना है तो शुरूआत हमारें केस से ही हुआ है पहला केस हमारा ही था यह सिम्पलैक्स का केस था लेकिन आज तक उस केस में कोई भी प्रगति नही हो पाया

और २० हजार रूपयें के ब्याज के लिए आदेश हुआ है हाई कोर्ट से हुआ है । कि जो २० हजार आप दे रहे है उसके उपर ब्याज दों तो हाई कोर्ट जो कि मालिक को बचा रहा है पहले आदेश में उसने लिखा कि २० हजार रूपयें उनके खाते में जमा किया जाए और उसके बाद लिख दिया कि नही आप उनकों २० हजार का ब्याज जमा करों तो हमारा पैसा है तो हमारें खातें में जमा होना चाहिए बैक हमकों ब्याज देगा मालिक उस

पैसें का ब्याज हमकों दे राह है और उस पैसे को वह अपने इस्तेमाल कर रहा है तो आज पूरे मजदूर का न्यायपलिका से विश्वास उठता जा रहा है क्योकि इतने लम्बें आदेश को खीच कर ले जाना और आदेश नही देना लटका कर रखाना मजबूर कर देना मजदूर को तो उससे मजदूर का उससे विश्वास उठ ही रहा है ।

Q- यह जो इतनी लडाई चली है १९९० से आप लोगों ने हडताल करी और जो हडताल जिस विषय पर करी वह तो आपका मौलिक अधिकार है यूनियन बनाना उसमें कोई गैर कूननी या मालिक की परमीशन की आपको कोई जरूरत नही थी तो उसमें आज २००३ खात्म होने को है मगर अभी तक आप लोगों को न तो नौकरी पर लगाया गया न ही उसका मुआवजा हाथ में आया तो इतनी लम्बी लडाई में मजदूर अपने आप को जब कानून दायरें में घूम रहा है सब कुछ सविधान के अनुसार एक आन्दोलन चला रहे है तो मजदूर अपने आपकों कैसे खाडा रखों

।

Ans- मजदूर संगठन शुय में ही ८-१० महीनें तक जब तक हम पंडाल में रहे तो मजदूर संगठन की तरफ से जहॉ जहॉ पर बाकी मजदूर काम करते है तो चावल, नमक, मिर्च की व्यवस्था संगठन की तरफ से किया जाता था और हर मजदूर को जीने लायक चावल देते थे उस आन्दोलन में महिला लोगों की भागीदारी भी अच्छा रहा पति पत्नि दोनों जो महिला काम नही करती थी घर में रहती थी वह भी आती थी आन्दोलन तो आन्दोलन में मजदूरों की भूमिका बहुत अच्छी रही और १० महीनें बाद करीब १९९२ में हम लोग जब रेल पटरी पर बैठें उसके बाद से मजदूर अपना थोडा थोडा दूसरा काम ताकिजी सके किसी फक्टरी में कही दूसरी जगह करना है और यहॉ पर कम से कम आपकों मै बता रहा हूँ ६० से ७० प्रतिशत लोग तो यही के लोकल है तो उनका घर से भी संबध है अपना खोती बाडी भी कर लेते है । और आन्दोलन में बहुत लोग बिहार से है आन्ध्रा से है केरल से है तो वह टैक्नीशियन टाईप के है सब लोग काम करने वाले है । तो कही न कही कर रहे है थोडा बहुत और जब भी

जरूरत पडता है संगठन को उनका खबर करता है । आन्दोलन में वह बिल्कुल उपस्थित होते है जब भी कोई कार्यक्रम किया जाता है ।

२८ सितम्बर १ जुलाई को जो बडा कार्यक्रम है शहीद दिवस उसमें हर साथी लोग शामिल होते है जो बाहर चले गये है । वह अलग है लेकिन जो यहाँ पर है वह सब लोग आते है ।

Q- सिम्पलैक्स फाउन्डरी कास्टिंग अभी भी चल रही है तो उमसें अभी तो मजदूर है वह सब ठेके मजदूरी पर है ।

Ans- जी हाँ पूरे लोग

Q- जो हालात तब थें जब आप लोगों ने हडताल की थी वह फक्टरी में अभी भी वही हडताल है ।

Ans- जी हाँ

Q- कोई यूनियन बगैरा उन वर्करों ने बनायी की नही

Ans- कोई यूनियन नही बनायी है वहाँ पर तो सप्लाई मजदूर है जैसे मेने बताया कि संवल चक्रवर्ती था वह मजदूरों को वहाँ पर

सप्लाई दिया था कुछ मजदूर जो मालिक पक्ष के थे करीब ३०-४० लोग उनकों फाईनल कर दिया फाईनल करने के बाद उनकों भी फिर सप्लाई मजदूरों के जैसा फिर काम पर रखा है यहाँ तक बता रहा हूँ कि उस समय जितना हम लोगों के उपर शोषण था हम तो लडके वाले थें आज तो वह लडने वाले नही है । वह तो बधुवा मजदूर टाईप के है । अन्दर में रहते है । कही पर भी रहते है जितना २४ घन्टा ४० घन्टा डयूटी करने के लिए बोलते है वह करते है नही तो उनकों निकाल बाहर कर देगा जब हम लडनें वालों के साथ ही ऐसा किया है तो जो बन्धुवा टाईप का मजदूर है उसके साथ किता होगा ।

Q- ये सिम्पलैक्स के खास उधोगपति है उनका नाम नियोगी जी की हत्या में आया और उनके पूरा सीबीआई ने इन्क्वारी करके उनका नाम निकाला । उनके उपर मुकदमा चला निचली अदालत ने उनकों मुल्जिम करार किया और अभी मुकदमा चल रहा है । सुप्रीम कोर्ट में अभी फाइनल फेसला हुआ नही उस पर तो एक तरह से उनके उपर बहुत भारी शंका है आन्दोलन तो मानता है

कि उन्होने की हत्या करवायी है उसके बावजूद सिम्पलैकस के उधोगपतियों के बिजनेस में उनका जो रिश्ता है प्रशासन के साथ या उनका जो रिश्ता है राजनैतिक प्राटियों के साथ वह कांग्रेस हो भाजपा हो राष्ट्रीय कांग्रेस हो उनका क्या कोई भी बदलाव आया है उनका रिश्ता प्रशासन वगैरा के साथ या फिर अभी भी उठना बैठना उतना ही सबके साथ है ।

Ans- बीच में जो राजनीतिक नेता लोग थे यहाँ के राजनीतिक नेता भी वही है चोटा बदमाश है तो उस समय नियोगी जी की हत्या के बाद जब इन लोगों का नाम आ गया फिर सजा हुई उस बीच के दौरान में कोई भी उन लोगों से जल्दी मिलना नही चाहता था लेकिन उसके बाद धीरे धीरे परिस्थिति बदली है अभी अभी यहाँ के मुख्यमंत्री अजीत जोगी वह सिम्पलैक्स कम्पनी में गया था वहाँ पर करीब अभी ५-६ महीनें पहले की बात है तो यहाँ के उधोगपतियों के चन्दें से पैसे से ही यह लोग चुनाव लडतें है अपने बचाव करने के लिए यह लोग जब जरूरत पडे तो पल्ला

झाड भी लेते है । और जरूरत पडता है तो जी हजुरी करते है यहाँ के उधोग पति और राजनेता लोग एक ही चट्टूफट्टू है ।

Q- और प्रशासन का उनके तरफ कैसे व्यवहार रहता है ।

Ans- आपकों मै बता रहा हूँ कि प्रशासन इनका परूरा गुलाम है उसकों तो पैसा दीजिए और दो थप्पड मार लिजिए यहाँ के जो प्रशासनिक लोग है यहाँ तो उधोगपतियों के सामनें पुलिस वालें जी हजुरी करते है । उनकों हर फैक्टरी वालें महीने के पैसे पहुचाते है थाने के लिए

Q- जब हाईकोर्ट में आप जाते है बिलासपुर या पहले जबलपुर में जाते थें तो वहाँ पर यह जो लेबर केस चल रहा है उसमें कोई यह नवीनशाह मुलचन्दशाह या चन्द्रकान्त खुद भी आते थें कि उनके वकील ही खडें होते थें ।

Ans- हाँ उनका वकील भी जाता था और मालिक लोग भी खुद मोजूद रहते थें ।

Q- वहाँ कोर्ट में जो माहौल था उसमें आपकों क्या लगता था कोर्ट उनकी तरफ कैसे देखता था और आपकी तरफ से जो वकील

खडें होते थें विलासपुर जबलपरु या रायपरु में वहाँ पर भी यह मालिक लोग जाते थें क्या इन्डस्ट्रीयल कोर्ट में ।

Ans- इन्डस्ट्रीय कोर्ट में तो ज्यादा नही गये लेकिन उनका मैनेजर पर्सनल मैनेजर यह लोग जाते थें और वकील जाते थें

Q- उनके कितने वकील होते थें रायपुर में

Ans- रायपुर में उनका कोई ऐसी पेशी नही थी जिसमें उनके ५-६ वकील न हो ।

Q- और आप लोगों की तरफ से

Ans- सिर्फ एक अपने पूरें केस में एक ही वकील रहा

Q- तो कैसे लगता था कि कोर्ट आप लोगों की तरफ कैसे देखाती है या आपके वकील की बात सुन भी रहे है ।

Ans- तर्क में तो देखिए जज हमारें वकील के तर्क में और वश में क्योकि हमारा पक्ष मजबूत रहता था और अच्छा तरीके से वह हमारी तरफ देखाते थें उस समय तो मजदूर वहाँ पर है तो उस समय जज को भी थोडा डर रहता था क्योकि दबाव बनता था मजदूर हम लोग कम से कम हर पेशी में २००-३००, ४००-५००

यहाँ तक कि इन्दौर जबलपुर में भी हम लोग ४००-५०० मजदूर जाते थें ट्रेन में बैठकर हम लोग अपने केस को सुनने के लिए जाते थें ।

तो उसका इफैक्ट जज के उपर भी पडता था कि इतना दूर से चल कर मजदूर यहाँ तक आया है लेकिन आपकों मै बता रहा हूँ कि जज लोग उस समय तो आदेश नही करते है बाद में करते है नियोगी जी के हत्याकाण्ड में हम लगातार एक महीने तक वहाँ पर रहे कम से कम जबलपुर में कभी भी ऐसा नही था ५०-१०० मजदूर हम लोगग हमेशा बैठते थें पूरा टेबल कुर्सी नही था तो जमीन पर ही बैठ जाते थें जब अपील की सुनवाई चल रही थी और जज बोलता था हमारे जो जज थे कन्नाबीरन उनसे जज बोलता था विपक्षी वकीलों से मालिक लोगों के वकीलों से बाकी जबलपुर के वकील लोगों को कानून सीखाना है तो कन्नावीरन जी से सीखिए लेकिन इतना दग्गाबाजी इतना बदमाशी किया उस जज दूबें ने केस को ही वह कर दिया ।

जज लोग तो बिना पेदी का लोटा है कब किधर खिसक जाये कोई क्या करेगें । कोई ठिकाना तो रहता नही है हसंते है, मुस्कुराते ह। और पता नही क्या करते है ।

Q- इधर जज नियोगी जी के हत्याकाण्ड का मुकदमा दुर्ग में चल रहा था उसमें आप कभी गये थे ।

Ans- जी हॉ हम लोग बहुत बार गये थें

Q- तो वहॉ पर भी खूब वादात में सब मजदूर साथी आते थें बैठते थें पूरे केस में ।

Ans- जी हॉ लेकिन शुरू में क्या हुआ बन्द कमरे में उसकी गवाही शुरू किये ।

Q- क्यो किया ।

Ans- पता नही क्यो किया । हम लोगों ने विरोध किया बहुत जमकर कि कार्यवाही सबके समाने होना चाहिए ।

Q- क्या फर्क पडता है । आपकों गवाही तो वही होगी और जज भी वही बैठा है । आप लोग क्यो खुला कमरा चाहते थें ।

Ans- हम सभी सुने कि क्या बोल रहे है हमारा वकील और उनका वकील, सीबीआई का वकील और उनका वकील हमकों भी समझना चाहिए । हमारें वहॉ नेता थें इसलिए लेबर कोर्ट में भी हम लोग जाते थें हमकों इंगलिश नही आता था लेकिन उनकी बात से तो थोडा समझ में आता था कि यह क्या बोल रहे है यह वे बोल रहे है । थोडा थोडा समझ में आता था । जो नियोगी जी के केस में तो हिन्दी में चल रहा था पुरी कार्यवाही हिन्दी मे थी इसलिए हम लोग जाते थें महिला भी जाती थी पुरूष भी जाते थें और लगातार जाते रहे ।

Q- मगर आपकों लगता है कि आपके बैठने से कोई फर्क पडता था वहॉ पर एक तो आप लोगों का सुनना और आप लोग समझना चाहते है कि क्योकि आपके नेता की हत्या हुई है वह तो आप लोगों की इच्छा है पर क्या न्याय के उपर कोई फर्क पडता है । अगर आप लोग वहॉ पर मौजूद है या न हो न्यायधीश को या पूरे न्याय की व्यवस्था को आपकों क्या लगा वहॉ पर

Ans- बहुत फर्क पडता है पहले दूसरे जज था राजपूत पे मालिक लोग नही लगते थें कि मुजरिम है यह लगते थें कि जैसे ये ही लोग जज हो । आराम से कुर्सी पर बैठते थें और जैसा बोलते थें बैसा जज सुनता था । लेकिन जब हम लोगों ने वहाँ बैठना शुरू किया और विरोध करना शुरू किया तो उसके बाद उनका वह हो गया हम लोगों ने विरोध किया कि यह जज सही नही है तो उसके हटने के बाद टी के झा आये । उन्होने बोला तुम मुजरिम हो । मुजरिम जैसा रहो । और कटघरें में खाडा रहों मुजरिम हो मुजरिम जैसा रहों । कटघरें में खाडा रहों और इनकों बैठनें के लिए दो और हम लोगों कें जाने से जज कों भी हिम्मत होता था क्योकि यह बदमाश लोग है कब क्या कर देगें कोई जरूरी नही कि यह जज को भी मार सकते है तो वहाँ पर हम लोग ५०-१०० बैठते थें । अन्दर में जगह नही है तो बाहर में बैठते थें । जितना दिन सुनवाई चली गवाही चली उस कोर्ट के अन्दर इतना जगह नही था हम एक दम फुल रहता था लोग

खडें बैठें सब रहते थें दरवाजे की तरफ भी बाहर भी ऐसा चलता था ।

Q- आपने गोली काण्ड का जिक किया था जब वह गोली काण्ड हो गया था उसके बाद प्रशासन वगैरा ने क्या किया था आप लोग पकडें गये थें आप कहाँ थें उस वक्त ।

Ans- रेल पटरी में गोली चला हम लोग भगें है । जाकर शारदा पारा जामुल जैसे जगहों पर वहाँ मजदूर बस्ती है वहाँ पर रूके तो उसके बाद वहाँ कफर्यू लगा दिया गया और मजदूरों को घर घर में ढूढ करके जो मजदूर मिलते थें उनकी पिटाई करना उनकों जेल में बन्द कर देना । प्रताडित करने का तरीका की कहाँ तुम्हारे नेता लोग है । उनकों खोजना तो पुलिस वालों को बहुत दिनों से इन्तजार था कि कब छत्तीसगढ मुक्ति मोर्चा हमारे चगुल में फसें और इनकों रगड दे और हमारें शान्तिपूर्व आन्दोलन को इन्होने वी.के सिंह की हत्या करके और गलत बस जला करके और हमारें उपर गोली भी चलाया और हमारें करीब पूरे नेता लोगों को भी पकडें और हमारें करीब १००-१५०

मजदूरों को बहुत मार मारें और उस गोली काण्ड में १७ साथी शहीद भी हो गये और करीब ३०० के आस पास घायल भी थें उसमें महिलाओं की संख्या भी बहुत था तो यह पुलिस वालें मुझें तो नही लगता कि कभी भी यह मजदूर वर्ग और किसान वर्ग के विश्वास को जीत पाए क्योकि हर समय यहाँ के प्रशासन बोलते है कि मजदूर किसानों और तमाम लोगों के विश्वास को जीतों क्योकि आज इतनी पुलिस व्यवस्था जो प्रशासन प्रणाली है इतने नीचे गिर चुकी है कि २-२ रूपयें में बिक जाते है तो यहाँ तो उधोगपति लाखों लाखों दे रहे है तो उसमें तो क्या क्या नही कर सकते ।

Q- तो यह पूरी अदालत के फेसले के बाद जबलपुर से छूटने के बाद सिम्पलैक्स लोगों का कोई मजदूर के रवैयें में इनका फर्क या उधोग चलानें कोई आपकों बदलाव आया की नही ।

ns- वहाँ से बरी होने के बाद मजदूरों के लिए तो उनका कोई बदलाव नही हुआ है । हाँ उनकी कम्पनी चलाने में कुछ परिवर्तन आया है । जो एच.पी.शाह था उनका चाचा मूलचन्द

नवीनशाह का चाचा तो वह दिल्ली में रहता था तो वह आकर अब अपनी को चला रहा है । और नवीन शाह ने तो सिम्पलैक्स ग्रुप से अपना अलग कर लिया है । और दीपक शाह या तो वह मर गया कैन्सर से तो वैसे उनके व्यापार में थोडा सा परिवर्तन तो आया है और आर्डर तो जैसें पहले था वैसे ही है । विशेष कोई खास नही है । नही तो मै आपकों बता रहा हूँ कि एक साल दो साल में हमेशा यह दो तीन कम्पनी लगाते थें । लेकिन जब से आन्दोलन चला है नया प्रोजेक्ट कोई नही लगा पाये है । नया प्राजेक्ट नही लगा पायें है और पुरानी फक्टरी को चलाने में ही सक्षम नही है ।

Q- आप यह बातइए आप तो बाहर से है आप छत्तीसगढ के रहने वाले नही है आप अपने घर के पहले थें जो बिहार से इधर आये हो । तो आन्ध्रा के भी नही है और जगहों के भी है आपने कहा तो काम ढूढतें हुए वर्कर इधर पहुच जाते है ।

Ans- जी हाँ

Q- तो आज कल खूब चर्चा चल रही है कि जो जिस जगह का रहने वाला है जिस राज्य का जिस प्रदेश का उसकों वहाँ नौकरी मिलनी चाहिए और आसाम और बिहार शिव सेना ने खूब इस बात पर मार काट हो रही है । इसमें मजदूर भी मारे जा रहे है । कि हम यहाँ के है । हमारें लिए नौकरी होनी चाहिए । छत्तीसगढ का भी एक अलग राज्य बनाया गया है । मुक्ति मोर्चा ने भी नियोगी जी ने भी यह नारा दिया था कि नये भारत का यह नया छत्तीसगढ तो मुक्ति मोर्चा की पहचान जो है एक छततीसगढ ही कि वह क्या है और क्या आपकों आन्दोलन में रहते हुए कभी ऐसा लगा कि आप बाहर के है । जेसा आप जानते है हत्या काण्ड की जॉच के समय भी यह पूरी बात उभरी थी कि नियोगी जी तो छततीसगढी नही है वह तो बंगाली है यह तो बंगाली और छत्तीसगढी का झगडा है। उसमें किसी ने उनकी हत्या की होगी । फिर सीबीआई ने जॉच करके देखा कि यह सब नही है । यह तो उधोगपति का साजिश है उनकों बताने के लिए

तो आप एक बिहारी के रूप मे यहाँ है । तो आपकों कभी आन्दोलन में ऐसा लगा और क्या पहचान है छततीसगढी की

Ans- मै जब से आन्दोलन में जुडा हूँ । मै यहाँ पर जब भी रहा हूँ बिहारी के हिस्सें से नही रहा हूँ मै छत्तीसगढी की हैसियत से रह रहा हूँ । और मै पूरा छत्तीसगढी भी बोलता हूँ उधोगपतियों ने हमारें बीच भी लडाई का बीज बोने की कोशिश की थी । छत्तीसगढी और हमारें, हम जितने बाहर से आ रहे है उन्होने फुट डालने की कोशिश भी की थी लेकिन नियोजी पहले से ही जानते थें उन्होने बोला देखिए छत्तीसगढी कौन है साफ शब्दों में बोले कि जो लोग आन्ध्रा बिहार और जगहों से आकर के छततीसगढ के हित के बारे में सोचते है व असली छत्तीसगढी है । और छत्तीसगढिया वह नही हे जो यहाँ रहकर के छत्तीसगढ में और छत्तीसगढियों को शोषण करे । छततीसगढियों के उपर अत्याचार करे वह छत्तीसगढी नही है उन्होनें साफ कहा कि चाहे यह लोग कही के हो लेकिन यहाँ के हित के लिए काम कर रहा है यहाँ के समाज के लिए काम कर

रहा है । वहाँ लोगो के हित के लिए काम कर रहा है तो वह आदमी वहाँ का हुआ । और हम लोग जो यहाँ पर रहते व आसाम की बात हो चाहे महाराष्ट्र की बात हो वह तो हमारें देश को तोडने की बात है । और दूसरी बात यह है कि जिसकों उनकों बोलना चाहिए कि तुम बाहर के हो तुम यहाँ से जाओं जो विदेश से बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ आ रही है उसकों नही बोलते कि तुम विदेश के हो तुम जाओं । विदेश में जो महाराष्ट्र की फक्टरी है वह महाराष्ट्र मे ही रहनी चाहिए । यहाँ छत्तीसगढ में क्यों लग रही है । तो जो पूजी की बात है उसकी तरफ कोई नही बोलता और मजदूर के बारे में बोलता है वह तो मेहनत करता है चाहे वह बिहार का मजदूर हो या आन्ध्रा का हो या छत्तीसगढ का हो । या महाराष्ट्र का मजदूर हो उसका काम ही मजदूरी करना है और मजदूरी करके ही जीता है चाहे छत्तीसगढ के ही मजदूर हो अगले साल तो छततीसगढ में इतना पलायन होगा कि उसका कोई हिसाब ही नही है ।

उत्तरप्रदेश गये महराष्ट्र गयें श्रम का मामला जो है कि बाहरी छत्तीसगढी से नही होना चाहिए । श्रम जहॉ पर भी है श्रम करता है मेहनत करता है अपना पसीना बाहता है तब मजदूरी मिलता है उसकों महाराष्ट्र शिव सेना तो वैसें भी साम्प्रदायिकता है वह लोग तो अपनी राजनीतिक रोटी सेक रहे है और मजदूरों के हित में काम नही कर रहे है । मजदूरों के हित में अगर काम करते तो यह जो आसाम में उल्फा उग्रवादी है चाहे कुछ भी मेरा कहना है हम को तो सरकार से रोजगार के लिए लडना चाहिए जो बेरोजगारी बढ रहा है उसके लिए कोई ध्यान नही दे रहा है । जो आसाम में चल रहा है, महाराष्ट्र में चल रहा है उन लोगों को बेरोजगारी का मुददा उठाना चाहिए और जो विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियॉ है उनके बारें में मुददा उठाना चाहिए जो बाहर की कम्पनियॉ है वह यहॉ के कुटीर उधोग को चोपट कर रहा है यहॉ मशीनीकरण अन्धाधुंध हो रहा है जिससें लोग बेरोजगार हुए है । सार्वजनिक क्षसेत्र जो है नीजि क्षेत्र को बेचा जा रहा है तो वहॉ पर मजदूर

बेरोजगार हो रहे है । मतलब रोजगार की व्यवस्था सरकार नही कर रही है ।

Q- आप मुझें यह बताओं कि साम्प्रदायिकता की तरफ दगं की तरफ आप कहॉ के निवासी हो इस पहचान का मुददा इस पूरें देशभर में इस बात पर दंगा हो रहा है आप आसाम के हो कि बिहार के हो कि हिन्दू हो कि मुसलमान हो गुजरात में हुआ उससे पहले बहुत जगहों पर हुआ था पहले भी यह दगें हुए थें अब देखा जा रहा है कि इन दंगों में मजदूरों की और आदिवासियों की भागीदारी काफी रहती है । और मजदूर आन्दोलन में एक तरह से विश्वभर में थोडा कम हो रहा है । तो यह यह क्या है जो मजदूर को आज इस तरह की पहचान में इस तरह के दगं की तरफ ज्यादा खिचाव लग रहा है और आन्दोलन में कम मजदूर जुड रहे है आज

Ans- नही देखिए यह गलत बात है मजदूर जो है वह दगें की तरफ नही जा रहा है वह लोग जो गलत लोग है आपको मै बता देता हूँ कि जो मेहनत करता है वह जो दंगा आज हिन्दुस्तान में क्षेमियकता

का मामला उठ राह है आसाम में उठ रहा है महाराष्ट्र में उठ रहा है यह भी विदेशी लोगों की एक साजिश है ताकि यहाँ के मूलभूत समस्या के उपर मूलभूत जो बात है बेरोजगारी की बात ढकल डालर की बात हो चाहे विदेशी पूंजी की बात हो उसके उपर लोगों का ध्यान न जाए लोग आपस में लडतें भिडते रहे और इसकों जिस तरह से यहाँ की मिडिया यहाँ के जो अधिकारी वर्ग है । रानीतिक नेता है वह गलत ढंग दे रहे है गलत तरीका दे रहे है ।

आप देखिए चाहे काशमीर हो गुजरात हो चाहे वह आसाम हो कौन मरा मर कौर रहा है जो मेहनत कर रहा है मजदूरी कर रहा है । वह ही मर रहा है मरने वाला कोई उधोगपति नही है कोई नेता नही है मरने वाला मजदूर है और कमाने वाला भी मजदूर है आज जिस तरीके से यहाँ के राजनीतिक नेता लोग गलत ढंग दे रहे है चाहे गुजरात में देखा लीजिए चाहे महाराष्ट्र और आसाम में देखा लीजिए तो आज मजदूर वर्ग जब तक जागेगा नही जब तक हकीकत का पहचानेगा नही और हकीकत न पहचाने इसलिए सह बस नाटक कर रहे है जिस दिन मजदूर और किसान

अपने हक को पहचान लेगा समझ लेगा उस दिन हमारें देश के अन्दर यह जितने नाटकबाज राजनीतिक नेता लोग चोर बदमाश है उनका चलेगा नही ।

Q- एक आपने बताया कि किस तरह से पुलिस ने आपके उपर कई मुकदमें चलाए थें तो आपने एक जिक किया ३०७ का मुकदमा हुआ था आपके उपर उसके बारें में थोडा बताए ।

Ans- जी हाँ एक तो हमारें उपर उनके गुन्डों द्वारा मारपीट किया गया २४ अगस्त १९९१ की बात है हमला हुआ हम लोगों के उपर और उसके बाद में हम लोग अस्पताल में थें । मै हलधर तरूण और सुखालाल फिर नियोगी जी आए उसके बाद नियोजी २-३ सो श्रमिकों को लेकर दिल्ली भी गये तमेरे को तो गिरफतार कर लिया गया था और उसमें हलधर सुखालाल गये थें जिनकों चोट चलगी थी लेकिन वहाँ पर करीब एक लाख मजदूरों द्वारा साईन किया गया कागज राष्ट्रपति को दिया गया और वहाँ आने के बाद में ज्यादा नही १५-२० दिन बाद ही नियोगी जी की हत्या हो गयी ।

तो नियोगी जी वह जानते थें उसी समय बोले कि जिस तहर से यह लोग गुंडा की फोज रखे है तो कभी हमारी हत्या हो सकती है और उनकों आभास भी था एक बार सिम्पलैक्स कम्पनी का मालिक जा रहा था और वह गाडी में एक्सीडेन्ट हो गया असल में क्या हुआ कि मजदूर लोग थें चिल्लायें जरूर और जब चिल्लायें चिल्ला चिल्ली हुआ तो डर के मारें उसकी गाडी ट्रक से साथ टकरा गयी ।

और ट्रक में आ गया तो हम लोगों के उपर ३०७ लगा दिया मतलब कम्पनी का कुछ भी हो जाए हमारें उपर तो करीब ४-५ और मामला है सिम्पलैक्स का और अभी भी चल रहा है मालिक लोगों का तो थाना में बधा हुआ था जितने तक हम लोग गेट में बैठें थें कम से कम ८-१० पुलिसवालें अन्दर में रहते थें और डगगा बाहर में पुलिस रहता था तो आज प्रशासन की जो रवैया है वह थोडा पहले से चेन्ज हुआ है लेकिन आज भी अगर पैसा मिलता है तो वही अपनारूप रंग दिखाते है । तो ३०७ एक नवीन शाह का था तो वह वाला तो उसके ही ब्यान से उसने जो ब्यान दिये थें एक बार बोला कि हमारें सामने शेख अंसार और

नेपाल सिंह गाडी के सामने दिखें एक बार सामनें हलधर वी.के राम दिखा तो गेट खोलते ही वी.केराम और हम्ताज दिखा तो एस.वी.के सिह और सुखा लाल गेट खोला मतलब उसकी जो बात थी उसी से जज ने बोला कि यहा मुख्य मुजरिम है और इसने ही वह कर रहा है ।

और नवीनशाह बोला कि वहाँ पर १०-२० मजदूर थें उसका फासिसी ने बोला क नही वाहँ पर करीब ३-४ सौ मजदूर थें उसका जो ड्राईवर था उसकी बात से लग रहा था कि यह सत्य नही है । ड्राईवर जो सामने चला रहा है वह ज्यादा देखोगा याह तुम ज्यादा देखोगे तुम ड्राईवर के पीछें सीट में हो तो ज्यादा तो ड्राईवर ही देखोगा तो उसके चलते जज ने बोला कि इसमें स्पष्ट नही हो पा रहा है इसलिए इनको बरी किया जाता है और उसके बाद बोला कि पाँच लोगों के उपर ३४१ इतना दिन केस चल गया इसमें खात्म करते है तो वह केस हम लोगों का खात्म कर दिया गया ।

और अभी ३०७ दूसरें केस का चार्ज अभी लगने वाला है तो उसमें देखिए क्या होता है ।

Q- तो यह कानून को न्याय प्रशासन को न्याय प्रणाली को आज लोग कैसे समझतें है कभी कभी तो अच्छा आर्डर मिल जाता है जो सही है अच्छा आर्डर से यह नही कि आपके हक में हो पर किसी के हक हमें हो जो न्याय और कानून के हिसाब से और कभी कभी साफ दिखाता है जैसे जबलपुर में नियोगी जी के हत्यारों को छोड दिया गया कि यह तो दवाब में है कानून तो किस तरह से आन्दोतल इस न्याय के ढाचें को समझता है ।

Ans- देखिए जितना भी हमारें पक्ष में आदेश हुआ वह हम लोग आन्दोलन के बदौलत ही लिये है । इन्डूस्टीयल कोर्ट में चाहे इन्दौर में हम लोगों ने बहुत सोच समझ कर कदम उठायें और आन्दोलन भी किये अगर हम लोग आन्दोलन नही करते आने अधिकार की बात रोड में नही करते तो कोर्ट में भी हमारें पक्ष में आदेश नही मिलता तो हम करीब ५ हजार मजदूर बिलासपुर हाईकोर्ट में गये थें जज की नियुक्ति के लिए हमकों लडना पडा देखिए बहुत गलत बात है ।

जज की नियुक्ति हो उसकें लिए हम करीब ५ हजार मजदूर जाकर के हम लोगों ने प्रदर्शन किया नाराबाजी किये मिटिंग कियें

उसके बाद एक जज की नियुक्ति भी हुयी फिर एक जज कम हो गया । अभी पता नही कि फिर हम लोगों को लगता है कि हाईकोर्ट जाना पडेगा हम लोगों की अभी तेयारी चल रही है कि हाईकोर्ट जाना पडेगा । हाईकोर्ट हम लोग जायेगें तो बीच में चुनाव आ गया है । तो चुनाव को देखतें हुए उसकों थोडा रोक दिया है । और चुनाव के बाद में फिर हम लोग बिलासपुर जायेगें करीब समें १०००-१२०० मजदूर महिला पुरूष लाल हरा झन्डा और लाल हरा ड्रेस पहनकर जायेगें । ।

और उसमें जब तक बिलासपुर हाईकोर्ट में पूरे जज और हमारें केस का उसमं हमकों आदेश नही मिलेगा तक तक हमारी लडाई जारी रहेगी और नियोगी जी बोल चुके है सिम्पलैक्स से मजदूर सिम्पलैक्स जायेगा यह लडाई रूकने वाला नही है चाहे कितना भी समय लगे । और कितना भी कुर्बानी देना पडें मजदूर कुर्बानी देते आ रहा है और आगें भी देगा और लडाई जारी रहेगा ।